WWJMRD 2022;8(11): 30-37
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
Impact Factor SJIF 2017: 5.182 2018: 5.51, (ISI) 2020-2021: 1.361
E-ISSN: 2454-6615

नीरज कुमार
शोधार्थी, भूगोल विभाग, कु0वि0, रा0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीखेत, अल्मोंड़ा, उत्तराखण्ड भारत

हुक्कम सिंह
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, कु0वि0, हे0न0ब0, रा0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खटीमा, उत्तराखण्ड भारत

डी0एस0 परिहार
संकाय, भूगोल विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, डी0एस0बी0 कैम्पस, नैनीताल, उत्तराखण्ड भारत

सुरेन्द्र सिंह
शोधार्थी, भूगोल विभाग, सो0सिं0जी0वि0, रा0स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बागेश्वर, उत्तराखण्ड भारत

चन्द्र प्रकाश सिंह
शोधार्थी, अर्थशास्त्रविभाग, सो0सिं0जी0वि0 एवं परिसर, अल्मोंड़ा, उत्तराखण्ड भारत

Correspondence:
डी0एस0 परिहार
संकाय, भूगोल विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, डी0एस0बी0 कैम्पस, नैनीताल, उत्तराखण्ड भारत

सीमांत जनपद पिथौरागढ़ में हरित पर्यटन एवं रोजगार

नीरज कुमार, हुक्कम सिंह, डी0एस0 परिहार, सुरेन्द्र सिंह, चन्द्र प्रकाश सिंह

सारांश

आधुनिक समय में विश्व के समस्त देशों में पर्यटन का विकास बहुत तेजी से हो रहा है, जो कई पर्यटन स्थलों में लोगों के आजीविका एवं रोजगार के रूप में मुख्य साधन भी बन गया है। किसी भी राष्ट्र या क्षेत्र के विकास में पर्यटन एक महत्वपूर्ण क्रिया है। पर्यटन गतिविधियों ने एक उद्योग का रूप ले लिया है, इसमें रोजगार की संभावनाओं के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता ने विश्व के पर्यावरणविदों को चिंतित किया है। अनियोजित एवं अनियंत्रित पर्यटन से जैव–विविधता के साथ पारिस्थितिकी तंत्र भी प्रभावित होता है। अतः इन दुष्प्रभावों को नियंत्रित करने के लिए पर्यटकों को हरित पर्यटन हेतु जागरूक करना अतिआवश्यक हो गया है। हरित पर्यटन समस्त पर्यटन का वह भाग है, जो प्रकृति पर आधारित है, पारिस्थितिकी का पोषक होने के साथ जिसमें शिक्षा एवं विश्लेषण मुख्य घटक है और स्थानीय लोगों के लिए आजीविका एवं रोजगार का मुख्य साधन है। हरित पर्यटन से स्थानीय क्षेत्र के विकास के साथ ही साथ लोगों को रोजगार प्राप्त होगा एवं पर्यावरण संरक्षण भी किया जा सकता है। हरित पर्यटन से भौतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं पर्यावरण के पतन को रोका जा सकता है। सीमांत जनपदपिथौरागढ़ एक प्रसिद्ध हरित पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है। यह स्थल हिमालय के तलहटी में होने से प्राचीन काल से जैवविविधता एवं पारिस्थितिकी दृष्टि से संपन्न रहा है। जिस कारण वन एवं वन्य उत्पाद यहाँके लोगों के लिए आजिविका, रोजगार एवं भोजन का माध्यम बने हुए हैं, इस क्षेत्र में हरित पर्यटन एवं रोजगार की क्षमता विद्यमान है। यह हिमालय पर्वत श्रृंखला में स्थित होने के कारण यहाँ का भूदृश्य, गहरी घाटियाँ, नदियाँ, वन एवं वन्य जीव पूरे विश्व में पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र हैं। जिससे स्थानीय लोगों की सहभागिता, होटल, भोजनालय, परिवहन, पार्क, होमस्टे, बागवानी, स्थानीय उत्पाद के माध्यम से रोजगार में वृद्धि की जा सकती है। पर्यटन में रोजगार की बड़ी संभावनाएं हैं, इसलिये हरित पर्यटन के विकास से सीमांत जनपदपिथौरागढ़ में स्थानीय क्षमता, आजीविका, रोजगार एवं सतत विकास किया जा सकेगा।

मुख्य शब्दः हरित पर्यटन, आजीविका एवं रोजगार, पर्यटन उद्योग, जनपद पिथौरागढ़ ।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के विकास में पर्यटन न केवल महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है बल्कि विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में सांस्कृतिक परिवर्तन लाये जाने का, रोजगार एवं आजीविका का मुख्य स्रोत है। पर्यटन के विभिन्न रूपों में प्रमुख ऐतिहासिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, साहसिक पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, क्रीड़ा पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन तथा अन्य है। प्राचीन समय में सामान्यतया धनी वर्ग ही पर्यटन का आनंद लेता था परंतु वर्तमान समय में निम्न धनी वर्ग व मध्यम धनी वर्ग भी आनंद की प्राप्ति हेतू यात्राएं करता है। जिसके कारण पर्यटन क्षेत्र वर्तमान में एक रोजगार के स्रोत के रूप में तेजी से उभरता नजर आता है साथ ही पर्यटन ने एक उद्योग का रूप ले लिया है। पर्यटन रोजगार प्रदान करने के साथ सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक तीनों तत्वों के संरक्षण पर बल देता है। पर्यटन की क्रिया में तीन महत्वपूर्ण तत्व समय, स्थान तथा मनुष्य है जिसके बिना पर्यटन की कल्पना नहीं की जा सकती है।

वर्तमान समय में विश्व के समस्त देशों में पर्यटन का विकास तेजी से हो रहा है। पर्यटन उद्योग एवं

रोजगार के विकास के साथ–साथ पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण के संरक्षण की आवश्यकता ने विश्व के पर्यावरणविदों को चिंतित किया है, इन दुष्परिणामों को नियंत्रित करने के लिए पर्यटकों को हरित पर्यटन हेतू जागरूक करने की आवश्यकता है। इसी चिंता के परिणाम के आधार पर ही हरित पर्यटनका उद्भव हुआ और सम्पूर्ण विश्व में इसका प्रचलन फैलता जा रहा है। हरित पर्यटन पर्यावरण पर पारंपरिक पर्यटन के नकारात्मक पहलुओं को कम करता है और स्थानीय लोगों की सांस्कृतिक अखण्डता के साथ स्थानीय लोगों को रोजगार प्रदान करता है। अध्ययन क्षेत्र (सीमांत जनपदपिथौरागढ़) भौगोलिक दृष्टि से उत्तराखण्ड राज्य का एक महान व मध्य हिमालयी जनपद है, यहाँ हरित पर्यटन की अपार सम्भावनाएं मैजूद है। पिथौरागढ़ प्राकृतिक रूप से धनी है, यहाँ ग्लेशियर, पर्वत श्रृंखलाएं, नदी घाटियाँ एवं धार्मिक स्थल पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। हरित पर्यटन को स्थानीय समुदाय की आय सृजन को बढ़ाने के लिए रणनीतिक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है जिससे जैव विविधता को संरक्षण का उद्देश्य भी पूरा होगा।

मेंहदी एस0 अजगर–''पिथौरागढ़ वास्तव में भारतीय हिमालयी क्षेत्रों में एक अद्वितीय गंतव्य है, जिसमें सभी प्रकार के पर्यटन के लिए लगभग असीमित संसाधन है।''

उद्देश्य

1. हरित पर्यटन से मिलने वाले रोजगार व लाभों के बारे में अध्ययन करना।
2. जनपद पिथौरागढ़ में हरित पर्यटन के लिए संभावित स्थलों और गतिविधियों की पहचान करना।
3. जनपद पिथौरागढ़ में हरित पर्यटन के सुधार एवं उन्नति के लिए सुझावों को तैयार करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र को पूर्ण करने हेतू सर्वेक्षणात्मक, अवलोकन व विश्लेषणात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है। इसमें प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। सीमांत जनपदपिथौरागढमें हरित पर्यटन का अध्ययन 2019 में शुरू किया गया और और तद्उपरांत अध्ययन क्षेत्र का दौरा किया गया है, तथा अवलोकनात्मक विधि के माध्यम से लोगों से बातचीत करके प्राथमिक आंकड़ों को एकत्रित किया गया।

अध्ययन क्षेत्र

सीमांत जनपदपिथौरागढउत्तराखण्ड का उत्तर पूर्वी सीमा पर स्थित है, इसके उत्तर में तिब्बत (चीन) व पूर्व में नेपाल देश की अंतर्राष्ट्रीय सीमा लगती है, पश्चिम में बागेश्वर एवं चमोली जनपद, दक्षिण–पश्चिम में अल्मोंड़ा, दक्षिण में चम्पावत जिला से घिरा है। जनपद पिथौरागढ़ के पूर्व में काली नदी भारत व नेपाल की सीमा का निर्धारण करती है जो नेपाल व भारत को अलग करती है, तो वहीं उत्तर में स्थित हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियां तिब्बत (चीन) के साथ सीमा का निर्धारण करती है। जनपद पिथौरागढ को 24 फरवरी 1960 को अल्मोंड़ा से अलग करके एक स्वतंत्र जनपद बना दिया गया था, इसका भौगोलिक विस्तार 29.26^0 उत्तर से 30.48^0 उत्तरी अक्षांश तथा 79.49^0 पूर्व से 81.02^0 पूर्वी देशांतर (मानचित्र–1) तक फैला है। इसका सम्पूर्ण भाग पहाड़ी क्षेत्र के अंतर्गत आता है, जो हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं, हिमनद, बुग्यालों, घने जंगलों और नदी घाटियों के लिए प्रसिद्ध है, जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल 7090 वर्ग किमी0 है। पिथौरागढ़ में वर्तमान समय में 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 483439 है जो 12 तहसील, 8 विकासखण्ड, 64 न्याय पंचायतों व 1675 गाँव में निवासित है।

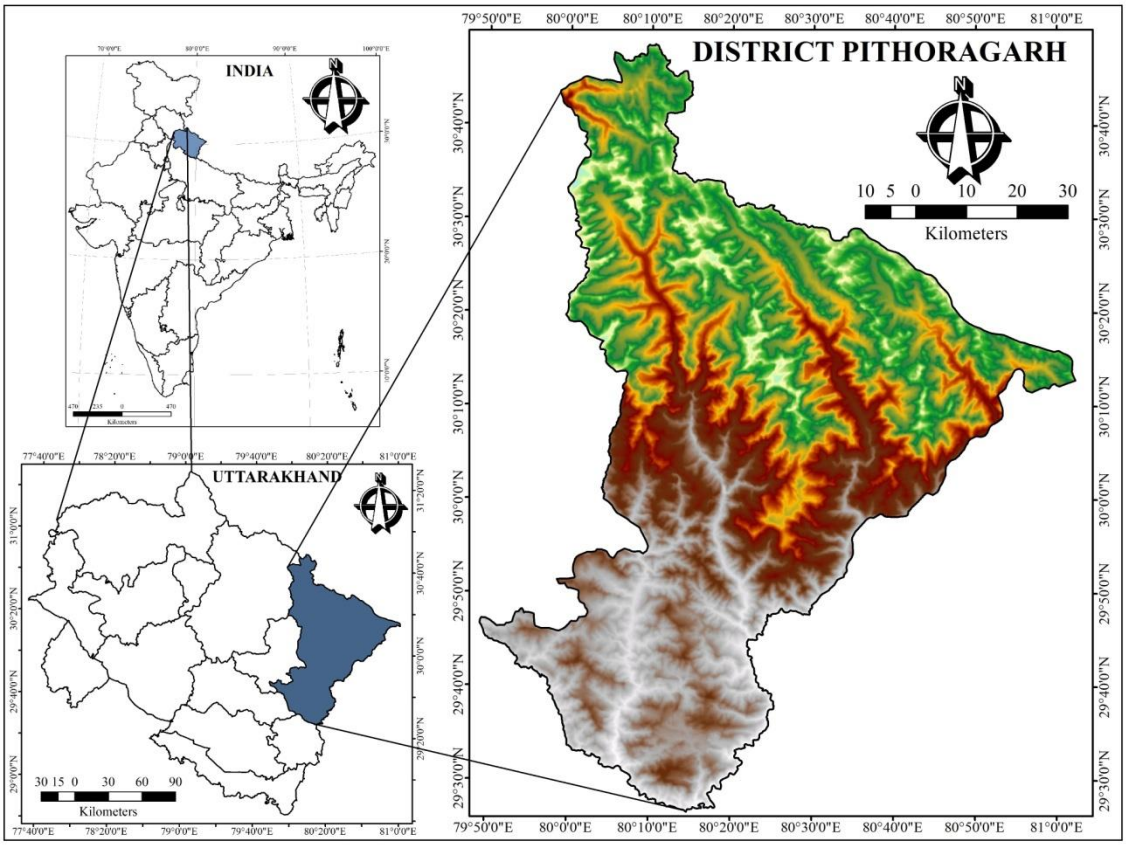

मानचित्र–1: जनपद पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड (अध्ययन क्षेत्र) का मानचित्र *(after D.S. Parihar)*।

जनपद पिथौरागढ़ में हरित पर्यटन

जनपद पिथौरागढ़ में पर्यटन का उद्‌गम बुग्याल की तरफ धार्मिक यात्राओं से शुरू होता है, जिसमें प्राचीन काल से श्रद्धालु तीर्थ यात्रा करने हेतू कैलाश मानसरोवर जाते थे और यह क्रम अब भी जारी है। जिसका मार्ग सीमांत क्षेत्र धारचूला से ही होकर जाता था, इसके अतिरिक्त कई स्थानीय धार्मिक यात्रायें बहुत प्रसिद्ध हैं। सीमांत जिला पिथौरागढ़ अपने प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है, जिस कारण इसे ***'छोटा कश्मीर'*** उपनाम से भी जाना जाता है। जिसमें भू–संरचना, उच्चावच, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, हिमनद (ग्लेशियर), कुण्ड व झरनें तथा वन्य जीवों की विविधता पाई जाती है। अतः इस सीमांत क्षेत्र में हरित पर्यटन की विशाल सम्भावनाएं हैं, हरित पर्यटन के अंतर्गत मानव प्राकृतिक सौंदर्य एवं उसके उपहारों का पूरा आनंद लेता है, और शरीर तथा मस्तिष्क में पुनर्योवन ला सकता है। हरित पर्यटन से इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और स्थानीय लोगों को रोजगार मिलने के साथ स्थानीय हस्तकला और सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है। हरित पर्यटन की सम्भावित क्रियाक्लापों में (मुख्य रूप से) इस क्षेत्र में अनेक चीजें आकर्षक के केन्द्र है जिनमें से मुख्य निम्न हैं–

1. ट्रेकिंग्स या पैदल यात्रा,
2. नेचर वॉक,
3. नेचर कैंप,
4. हर्बल पर्यटन,
5. साहसिक पर्यटन,
6. ईको पार्क एवं वन,
7. वन्य प्राणी दर्शन,
8. जल क्रीड़ायें।

जनपद पिथौरागढ़ को प्रशासनिक दृष्टि से 8 विकासखण्डों में बांटा गया है, 2011 की जनगणना के अनुसार कुल 1675 गाँव (सारणी–1) हैं। हरित पर्यटन के विकास में गाँव महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हरित पर्यटन में प्रयुक्त किये जाने वन विश्राम गृहों की सूची सारणी–2 में प्रस्तुत है जिनकों पर्यावरणीय दृष्टि से सजावट के साथ पर्यटकों का ध्यान पर्यावरण संरक्षण की तरफ मोंड़ा जा सकता है। पर्यटन विभाग पिथौरागढ़ के अनुरुप प्राप्तजनपद पिथौरागढ़ में भारतीय व विदेशी पर्यटकों का आगमन वर्ष 2000 से 2021 के मध्य सारणी–3 तथा आकृति–1, आकृति–2 के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है जिसमें कोविड–19 वायरस के प्रभाव के कारण देशव्यापी लॉकडॉन से जनपद में देशी–विदेशी पर्यटकों की संख्या में बहुत बड़ी मात्रा में कमी आयी। जिससे रोजगार व व्यापार में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था।

सारणी–1: जनपद पिथौरागढ़ के गाँवों की संख्या (स्रोत– Pithoragarh district Census Handbook, Census 2011)।

क्र.सं.	प्रशासनिक विभाजन	गाँवों की संख्या	प्रतिशत	क्र.सं.	प्रशासनिक विभाजन	गाँवों की संख्या	प्रतिशत
1	मुनस्यारी	223	13.31 %	6	गंगोलीहाट	332	19.82 %
2	धारचूला	73	4.36 %	7	पिथौरागढ़	166	9.91 %
3	डीडीहाट	167	9.97 %	8	मूनाकोट	173	10.33 %
4	कनालीछीना	208	12.42 %	9	पिथौरागढ़ (ग्रामीण) सीडी ब्लाक	49	2.93 %
5	बेरीनाग	284	16.96 %	कुल		1675	100 %

सारणी–2: जनपद पिथौरागढ़ में वन विश्राम गृह की सूची *(स्रोत– वन विभाग उत्तराखण्ड, पिथौरागढ़)*।

क्र.सं.	जनपद	वन विश्राम गृह का नाम	क्र.सं.	जनपद	वन विश्राम गृह का नाम
1.	पिथौरागढ़	अस्कोट वन विश्राम गृह	3.	पिथौरागढ़	थलकेदार वन विश्राम गृह
2.	पिथौरागढ़	बेरीनाग वन विश्राम गृह	4.	पिथौरागढ़	मुनस्यारी वन विश्राम गृह

सारणी–3: जनपद पिथौरागढ़ में वर्ष 2000 से 2021 के मध्य भारतीय व विदेशी पर्यटकों का आगमन *(स्रोतः पर्यटन विभाग पिथौरागढ़)*।

क्र.सं.	वर्ष	भारतीय	विदेशी	कुल पर्यटक	क्र.सं.	वर्ष	भारतीय	विदेशी	कुल पर्यटक
1	2000	97280	142	97422	12	2011	189821	777	190598
2	2001	112203	127	112330	13	2012	183000	398	183406
3	2002	135412	914	136326	14	2013	153127	562	153689
4	2003	137618	704	138322	15	2014	199745	542	180287
5	2004	153635	971	154606	16	2015	190687	318	191005
6	2005	160311	989	161300	17	2016	192756	470	193226
7	2006	165561	705	166266	18	2017	243123	565	243688
8	2007	162478	1004	163482	19	2018	153729	656	154385
9	2008	164255	653	164878	20	2019	208897	754	209651
10	2009	183484	926	184410	21	2020	46179	153	46332
11	2010	189474	774	190248	22	2021	53433	73	53506

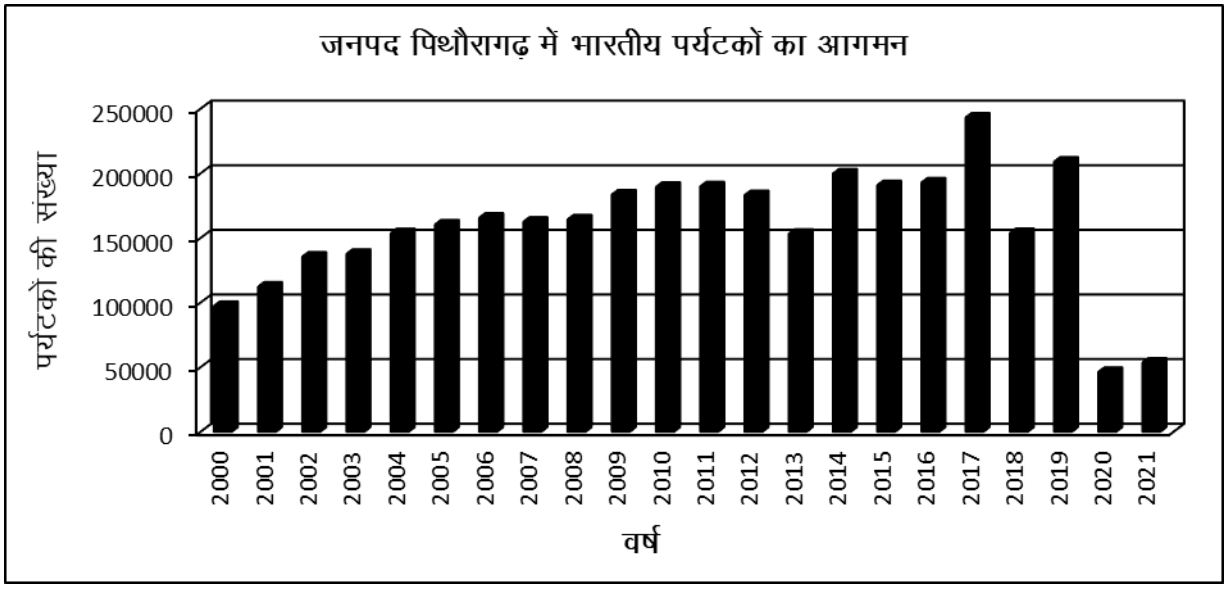

आकृति–1: जनपद पिथौरागढ़ में वर्ष 2000 से 2021 के मध्य भारतीय पर्यटकों का आगमन *(स्रोतः पर्यटन विभाग, पिथौरागढ़)।*

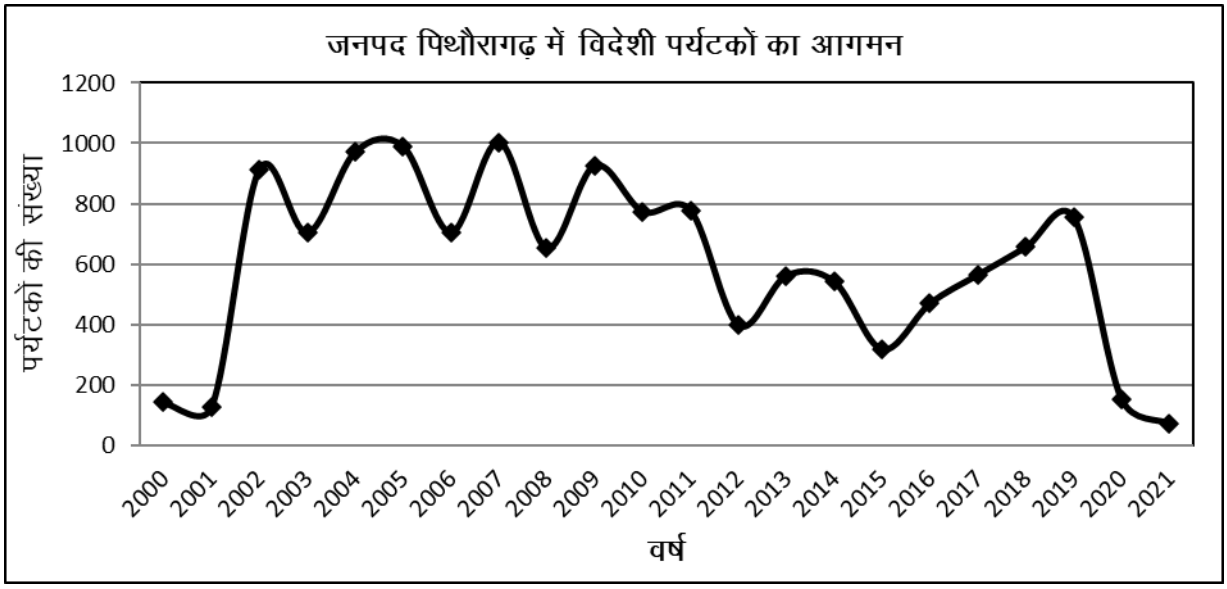

आकृति–2: जनपद पिथौरागढ़ में वर्ष 2000 से 2021 के मध्य विदेशी पर्यटकों का आगमन (स्रोतः पर्यटन विभाग, पिथौरागढ़)।

पिथौरागढ़ में हरित पर्यटन के लाभ व आकर्षण के मुख्य क्षेत्र

यह स्थानीय (लोकल) समुदाय के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करने के साथ–साथ आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है, और सतत् विकास के माध्यम से पर्यावरण प्रबंधन में योगदान देता है। जनपद पिथौरागढ़ अपने पर्यटन संसाधनों के बल पर घूमने के शौकीन आबादी को आकर्षित कर हरित पर्यटन आय के साधन के रूप में एवं रोजगार के मुख्य स्रोत के रूप में उभर सकता है। इससे क्षेत्र से हो रहे पलायन भी रूकेगा एवं आर्थिक विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण को बल मिलेगा। जो स्थानीय लोगों के रोजगार के सृजन के रूप में उभर सकता है। पिथौरागढ़ में हरित पर्यटन के मुख्य लाभ निम्न है –

1. जैव विविधता एवं प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण।
2. प्राकृतिक आपदाओं को रोकने में सहायता।
3. स्थानीय उद्योग (उद्यमिता) को प्रोत्साहन मिलेगा।
4. स्थानीय कला एवं हस्तशिल्प उत्पाद का प्रचार–प्रसार।
5. समीपवर्ती जंगल में बहुमूल्य जड़ी–बुटियों का उचित प्रबंधन एवं औषधि निर्माण।
6. रोजगार के अवसरों में वृद्धि।
7. इसके अलावा हरित पर्यटन पर्यटकों के बीच पर्यावरणीय विषयों की जागरूकता भी पैदा करता है।

मुनस्यारी क्षेत्र– यह क्षेत्र हरित पर्यटन दृष्टि से उत्तम है। कालामुनि के घने जंगल, विर्थीफॉल, सामने स्थित पंचाचूली की श्वेत हिमाच्छादित श्रृंखलाएं पर्यटक का मन मोह लेती है। जगह–जगह खिलने वाले पंगली पुष्प इसके सौंदर्य में चार चाँद लगा देते हैं, यहीं से होकर मिलम ग्लेशियर एवं खलिया टॉप के लिए मार्ग जाता है जो पर्यटकों का प्रमुख गंतव्य है। यहाँ कि अधिकांश भाग में भोटिया जनजाति निवास करती है, उनके द्वारा निर्मित कालीन, ऊनी कपड़े, ऊनी चादरें तथा पश्मीना की शॉलें लोकप्रिय है। मुनस्यारी के निचली घाटी में गोरी नदी प्रवाहित होती है जो आगे चलकर जौलजीबी नामक स्थान पर काली नदी से मिलती है। मुनस्यारी आलू, राजमा व अन्य उत्पाद गंधरायणी व जम्बू के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। शीतकाल

में यहाँ बर्फ पड़ती है तथा यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य हरित पर्यटन हेतू एक उत्तम स्थान है। मुनस्यारी में पर्यटन के प्रमुख स्थल निम्न हैं –

1. ग्लेश्यिर– मिलम ग्लेशियर–मुनस्यारी में मुख्य रूप से मिलम ग्लेशियर जो गोरी गंगा का उद्गम स्रोत है। यह ग्लेशियर पर्यटकों के लिए आकर्षक का केंद्र है। इस ग्लेश्यिर तक जाने के लिए पैदल मार्ग मुनस्यारी से प्रारम्भ होता है। यहाँ से बोग्ड्यार, मर्तोली तथा मिलम गाँव होकर 64 किमी0 की यात्रा करते हुए मिलम ग्लेशियर पहुँचा जा सकता है। यह प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त स्थल है। भारी संख्या में पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं तथा असीम आनंद की अनुभुति करते है।

नामिक ग्लेशियर–यह ग्लेशियर थल–मुनस्यारी मार्ग पर स्थित, विर्थी जलप्रपात के निकट बाला गाँव होकर थाला बुग्याल पहुँचा जाता है। यहाँ से चार दिन के यात्रा के पश्चात हीरामणी ग्लेशियर पहुँचा जाता है। अगले दिन नामिक ग्लेश्यिर के मुख तक पहुँचकर सुंदर जल स्रोतों एवं प्राकृतिक दृश्यावली का आनंद लिया जा सकता है।

इसके अलावा रालम, पंचाचूली एवं नंदाकोट प्रमुख ग्लेशियर हैं। जिनकी तलहटी में देवदार, चीड़, बांज–बुरांश के सघन जंगल हैं, जो आकर्षण के केंद्र हैं।

2. पार्क–पार्क मुख्य रूप से हरित पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है मुनस्यारी में **'ईको पार्क'** एवं **'लाईकेन पार्क'**हरित पर्यटन को आकर्षित करता है। उत्तराखण्ड के वन विभाग ने कुमाऊँ के मुनस्यारी में भारत का पहला 'लाईकेन पार्क' विकसित किया है, यह पार्क 1.5 एकड़ में फैला है। इस गार्डन में 120 प्रजातियाँ देखने को मिलेंगी।

मुनस्यारी के पातलथौड़ में 30 हेक्टेयर क्षेत्र में ईको पार्क विकसित किया गया है, वन विभाग ने आजीविका एवं रोजगार के लिए इसका निर्माण किया इसी इको पार्क में वन विभाग ने पहला पक्षी पर्यटन आधारित ग्रोथ सेंटर भी विकसित किया है।

3. कुण्ड–प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण कुण्ड जो कि पर्यटकों को मोहित करती है मुनस्यारी में थामरी कुण्ड व मेषर कुण्ड मुख्य पर्यटक स्थलों में से हैं। मदकोट में एक गर्म जल स्रोत है जो कि प्रकृति का उपहार है, जहाँ बहुत सारे पर्यटक आते हैं।

यह क्षेत्र जल प्रपातों, मुख्य तौर पर विरथी जल प्रपात व अन्य छोटे–छोटे जल प्रपात सहित अन्य पर्यटन स्थलों खलिया टॉप, मिलम गाँव, रालम गाँव, डाना धार व धार्मिक स्थलों में नंदा देवी मंदिर, गायत्री चेतना केन्द्र, महाकाली मंदिर, लाइकेन गार्डन तथा ट्यूलिप गार्डन है जिस कारण यह क्षेत्र हरित पर्यटन के लिए उचित है।

धारचूला–डीडीहाट क्षेत्र

धारचूला कैलाश मानसरोवर यात्रा मार्ग का प्रमुख पड़ाव है, यहाँ से छोटा कैलाश तथा नारायण आश्रम के लिए मार्ग जाता है। काली नदी के तट पर धारचूला भोटिया जनजाति द्वारा निर्मित ऊनी वस्त्रों कालीन, दन, पंखी, चुटका, थुलमा के लिए प्रसिद्ध है। डीडीहाट में अस्कोट वन्यजीव अभ्यारण कस्तूरी मृग के लिए विख्यात है जो पर्यटकों के आगमन के लिए उचित क्षेत्र है। वर्तमान समय में कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए अनेक देशी व विदेशी पर्यटक इस क्षेत्र की यात्रा करते हैं। यहाँ के पर्वत शिखर पर्वतारोहियों, पथारोहियों के लिए आकर्षक पर्वत शिखर रहे है। कुमाऊँ मण्डल के प्रमुख ट्रेकिंग मार्ग, पिथौरागढ़–पार्वती लेख–चोपता कैलाश–सिनलापास ट्रेक व पिथौरागढ़–लिपुलेख ट्रेक इसी क्षेत्र में पड़ता है। इसके अलावा अन्य पर्यटक स्थलों में ओउम् पर्वत, पंचाचूली बेस कैंप, छिपला केदार व जौलजीवी रॉफ्टिंग के लिए प्रसिद्ध है। धारचूला, मुनस्यारी शौका (भोटिया) लोगों के दो मुख्य केंद्र हैं जिनका पशुपालन, दन एवं कालीन उद्योग प्रमुख व्यवसाय एवं आजीविका है। धारचूला में दारमा, व्यास व चौदास घाटी अपने प्राकृतिक सौंदर्य, हिमाच्छादित चोटियों के लिए विश्वविख्यात है।

गंगोलीहाट–बेरीनाग क्षेत्र

प्रसिद्ध पाताल भुवनेश्वर गुफा गंगोलीहाट में स्थित है, जो धार्मिक रहस्यों के कारण प्रसिद्ध है जहाँ प्रतिवर्ष देशी–विदेशी पर्यटक पहुँचते हैं। यहाँ देवदार, चीड़, बांज के जंगलों से युक्त अलौकिक एवं नैसर्गिक प्राकृतिक सौंदर्य है। धार्मिक पर्यटक स्थल महाकाली मंदिर, लमकेश्वर महादेव, हरकेश्वर, राम मंदिर उच्च पर्वतीय भागों में स्थित है। बेरीनाग के पास चौकोड़ी में चाय के बागानों, पांखू में कोटगाड़ी मन्दिर, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं धार्मिक केन्द भी है।

जनपद पिथौरागढ़ में अन्य पर्यटन स्थलों में जनपद मुख्यालय के पास चण्डाक, थलकेदार, लन्दनफोर्ट (ऐतिहासिक किला), बौद्धमठ, महाराजा पार्क, भारत–नेपाल सीमा पर स्थित झूलाघाट पर्यटन स्थल है। इस प्रकार पिथौरागढ़ अपने प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विविधता हिमाच्छदित पर्वत शिखरों, अल्पाइन घास मैदानों, नदी घाटियों, शीतोष्ण सदाबहार वनों, जैव विविधता इत्यादि समाहित किये हुये हरित पर्यटन के लिए आदर्श दशायें उपलब्ध कराती हैं। जिससे

प्राकृतिक एवं सांस्कृति धरोहर का संरक्षण और विकास के साथ हरित पर्यटन के क्रियाक्लापों को शामिल करके स्थानीय समुदाय की भागीदारी से लोगों को आजीविका एवं रोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है।

हरित पर्यटन आजीविका एवं रोजगार स्रोत के रूप में

हरित पर्यटन मुख्य रूप से स्थानीय लोगों को रोजगार प्रदान करने का सबसे प्रमुख साधनों में से एक है। पिथौरागढ़ का अधिकांश भाग पर्वतीय एवं पहाड़ी है जिस कारण इन क्षेत्रों में भारी उद्योग की स्थापना की सम्भावनाएं सीमित है, तथा स्थानीय समुदायों के सहयोग से लघु एवं कुटीर उद्योग के विकास से स्थानीय लोगों के लिए आजीविका एवं रोजगार के मुख्य साधन के रूप में अहम भूमिका अदा कर सकता है। पिथौरागढ़ में हरित पर्यटन की पर्याप्त सम्भावनाएं हैं इसके प्राकृतिक सौंदर्य से आकर्षित होकर देश–विदेश के पर्यटक और पर्वतारोही यहाँ प्रतिवर्ष आगमन करते हैं। जिससे देश के साथ–साथ प्रदेश को भी विदेशी मुद्रा का लाभ मिलता है। ट्रेकिंग के माध्यम से पर्यटक छोटे–छोटे केन्द्रों एवं अन्य क्षेत्रों में पहुँचते हैं, जिससे स्थानीय लोगों को सीधे लाभ पहुँचता है। हरित पर्यटन आजीविका एवं रोजगार के साधन के रूप में मुख्य उद्योग निम्न हैं –

हस्तशिल्प उद्योग–यह एक सूक्ष्म (कुटीर) उद्योग है जिसके अंतर्गत वन आधारित उद्योग आते हैं, काष्ठ कला वस्तु निर्माण, रिंगाल–बांस आधारित वस्तु निर्माण इसके अंतर्गत आते हैं। रिंगाल से बने सामान मोस्टा, टोकरी, ढाले और बहुत से सजावटी वस्तुएं बहुत ही आकर्षक और गुणवत्तापूर्ण होती है, जिसका उपयोग प्लास्टिक सामानों के विकल्प के रूप में किया जा सकता है। पिथौरागढ़ में रिंगाल से निर्मित हस्तशिल्प उद्योग मुख्यतः नाचनी के भेंस्कोट, बांसबगड़, गॉधीनगर, मल्ला जोहार क्षेत्र तथा डीडीहाट के कुछ गाँवों में होता है। उक्त वस्तुओं को पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से भी प्रयोग में लाया जा सकता है और स्थानीय लोगों के रोजगार के साधन के रूप में पर्यटन से जोड़कर इसका विकास किया जा सकता है।

दन एवं कालीन उद्योग–धारचूला व मुनस्यारी में दन कालीन उद्योग रोजगार के मुख्य साधन के रूप में उभर सकता है। ऊन

तिब्बत से आयात करने के साथ स्थानीय स्तर पर भी भेड़ों से ऊन निकाला जाता था जिससे इस क्षेत्र में कभी पाँच हजार से अधिक परिवार ऊनी हस्तशिल्प पर निर्भर थे। ऊन से निर्मित विभिन्न प्रकार के वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है जिनमें मुक्ष्यतः पंखी, शौल, दन, थुलमा व विभिन्न प्रयोग में आने वाले ऊनी कपड़ों को बनाए जाते हैं।

इस सीमांत क्षेत्र चीन तथा नेपाल सीमा से लगे धारचूला व मुनस्यारी के हस्तशिल्प *'थुलमा'* को जी.आई. टैग *(भौगोलिक संकेतक)* भी मिला है जो इस उद्योग के लिये एक बड़ी उपलब्धि है। इस प्रकार इन लघु उद्योगों को आधुनिक तरीके से शुरू करके रोजगार में वृद्धि की जा सकती है। पहले इसका व्यापार मेलों के माध्यम से किया जाता था, यहाँ के ऊन से निर्मित दन, कालीन, स्वेटर, मफलर, मोजे, पंखी, चुटका और थुलमा बाजार में बड़ी मांग थी। जिसकी गुणवत्ता बहुत उत्तम है। आज इन उत्पादों को उचित बाजार की आवश्यकता है।

बागवानी एवं जड़ी–बूटी (औषधीय) के रूप में रोजगार

पर्वतीय क्षेत्र होने से अद्वितीय वनस्पतियों एवं वनों से प्राप्त बहुमूल्य जड़ी–बूटी उद्योग प्रमुख रूप से औषधीय रूप में इसका उपयोग किया जाता है। तुलसी, कुटकी, गंदरायण, जम्बू फरान, दालचीनी, तेजपत्ता, जंगली जीरा और किल्मोंड़ा जैसे अनेक औषधीय जड़ी–बूटियां इस क्षेत्र में मिलती है। बहुत से लोग उच्च हिमालयी क्षेत्रों से एकत्रित कर इनका व्यापार स्थानीय बाजारों में करते हैं जो उन लोगों के आजीविका का मुख्य साधन है।इस क्षेत्र की जलवायु तथा भौगोलिक दशाओं की अनुकूलता के कारण बागवानी एवं फलोउद्यान के विकास की असीम सम्भावनाएं है। यहाँ मुख्यतौर पर नाशपाती, पुलम, अखरोट, नीबू, माल्टा व बहुत से प्राकृतिक वन्य फलों में आंवला, तिमूर, च्यूरा, काफल, बुरांश महत्वपूर्ण फलों के पेड़–पौधे है जिनकी कृषि व्यापार की दृष्टि से किया जाता है। इसके अलावा मधुमक्खी पालन इस क्षेत्र में प्राचीन समय से ही होने वाला कार्य है। पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण चाय की खेती पर्यटन एवं व्यापार की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। चाय के बागान हरित पर्यटन को बढ़ावा देने में आकर्षित करने के साथ स्थानीय लोगों को रोजगार भी प्रदान करता है जिससे रोजगार के नए–नए अवसर स्थानीय लोगों को प्राप्त होंगे।

होम स्टे परियोजना

पर्यावरणीय दृष्टि व प्राकृतिक रुप से यह क्षेत्र संवेदनशील है जो भूकंपीय जोन–5 के अंतर्गत आता है। यहाँ पर बहुमंजिली इमारते बनाना खतरे को बुलावा देना है, तेजी से बढ़ते पर्यटकों की अवाजाही से बड़े–बड़े होटलों के बदले होम–स्टे परियोजना पर्यावरण प्रबंधन की दृष्टि से भी उचित है और साथ ही स्थानीय लोगों को रोजगार का अवसर भी प्रदान करता है। पिथौरागढ़ के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में भी होम–स्टे बन रहे हैं जो स्थानीय लोगों को रोजगार व पलायन को कम करने में प्रमुख भूमिका निभा रही है। स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने तथा भवन स्वामियों को अतिरिक्त आय का स्रोत उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से होम–स्टे परियोजना को प्रयोग में लायी जा रही है। आगंतुकों के लिए होम–स्टे आवास को प्रोत्साहित करके स्थानीय भागीदारी को बढ़ाया जा सकता है जिससे पारिस्थितिक रूप से नाजुक (संवेदनशील) क्षेत्रों में नए निर्माणों से बचा जा सके। सारणी–4 में अगस्त 2022 तक जनपद पिथौरागढ़ में विकासखण्डवार होम स्टे की स्थिति का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

सारणी–4: दिनाँक 10/08/2022 तक जनपद पिथौरागढ़ में विकासखण्डवार कुल पंजीकृत होम स्टे की संख्या (स्रोत – पर्यटन विभाग पिथौरागढ़)।

क्र.सं.	विकास खण्ड	होम स्टे की संख्या	क्र.सं.	विकास खण्ड	होम स्टे की संख्या
1	धारचूला	432	6	गंगोलीहाट	10
2	मुनस्यारी	79	7	कनालीछीना	13
3	बेरीनाग	46	8	डीडीहाट	04
4	मूनाकोट	19	योग		627
5	विण	24			

हरित पर्यटन के विकास में बाधाएं एवं चुनौतियां

सामान्यतः बहुत सारे चुनौतियां (बाधाएं) है जो पर्यटकों को इस क्षेत्र के विभिन्न स्थानों में पहुंचने में बाधाऐं पहुँचाते हैं, उनमें से प्रमुख कारक निम्न हैं–

परिवहन की समस्या–मानसून के दौरान पिथौरागढ पहुचना बहुत जोखिम भरा रहता है, पहाडी एवं हिमालयी क्षेत्र होने के कारण यहां बारिश के मौसम में भूस्खलन आम बात है। जिसके कारण बहुत से मार्ग अवरूध होने से यह मुख्य शहरों से अलग–थलग हो जाते हैं। इस मौसम में इन सडकों पर वाहनों व मनुष्यों का चलाना जोखिम भरा होता है। जिसके कारण पर्यटन में बाधाएं उत्पन्न होती है।

पर्यटन आवास गृह व होटल की समस्या–आवास सुविधाओं और होटल का अभाव पर्यटक को सीमित स्थानों पर अपनी यात्राओं को करने हेतु मजबूर करता है। सुदूरवर्ती पर्यटन क्षेत्रों में यह सुविधा न होने से खास कर हरित पर्यटन पर विपरीत प्रभाव पडता है। हरित पर्यटन के बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जहॉ रूकने और खानपान की सुविधा न होने से पर्यटकों के आगमन का अभाव रहता है।

चिकित्सा की समस्या–जनपद में गिने–चुने स्थानों पर ही प्राथमिक स्वास्थ केन्द्र हैं, दूरस्थ स्थानों में चिकित्सा का अभाव है। जिससे लोगों को दूर–दूर तक इलाज हेतु जाना पडता है। जिसका पर्यटन पर नकारात्मक प्रभाव पडता है। खासकर प्रमुख पर्यटन क्षेत्रों धारचूला व मुनस्यारी जहां हरित पर्यटन का मुख्य क्षेत्र है। उन विकास खण्डों में यह स्थिति और भी गम्भीर है।

विद्युत संचार एवं मनोरंजन का अभाव–विद्युत की समस्याएं दूरस्थ गांवों में ज्यादा है, कुछ क्षेत्रों में आपदाओं के दौरान संचार एवं विद्युत सेवाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। संचार के अभाव के कारण पर्यटकों को काफी समस्याओं का सामना करना पडता है। भारत, नेपाल व चीन के सीमावर्ती क्षेत्रों में पर्यटकों को संचार की समस्या से गुजरना होता है। साथ ही मनोरंजन के साधनों के अभाव के कारण पर्यटकों को इन क्षेत्रों की ओर आकर्षित करना मुश्किल होता है।

आपदाओं की समस्या–सीमांत क्षेत्र का अधिकतर भाग भौगोलिक रूप से उच्च हिमालयी क्षेत्र (महान हिमालय) के अन्तर्गत आता है। जो विशेषतौर पर आपदाओं की दृष्टि से अति संवेदनशील है। यहां भूकम्प, पत्थर गिरना, भूस्खलन, बाढ़, बादल फटना एवं ग्लेशियरों के टूटने का खतरा बना रहता है।

प्रतिवर्ष आपदायें पर्यटकों के आगमन व पर्यटन के विकास में सर्वाधिक खलल डालने का कार्य करते है।

पर्यटन विकास खास तौर पर हरित पर्यटन और इसके लाभ के प्रति लोगों में जागरूकता की कमी व विलुप्त होती पारम्परिक संस्कृतियां, पर्यटन स्थलों के विकास एवं देखरेख के अभाव के साथ ही वित्त के अभाव के कारण पर्यटकों के लिए उचित सुविधा प्रदान करने में असमर्थ हैं, ग्रामीण क्षेत्रों से हो रहे तेजी से पलायन भी हरित पर्यटन के विकास में चुनौतियां उत्पन्न कर रहें हैं साथ ही सीमांत क्षेत्र होने से सरकार भी विशेष ध्यान नहीं देती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

अनियंत्रित पर्यटन के कारण पर्यावरण का ह्रास होता है जिससे पर्यावरण, जैव विविधता तथा पारिस्थितिक तंत्र तो प्रभावित होता ही है साथ ही अतिनिर्माण व अधिसंरचना निर्माण कार्य के दुष्परिणाम होते हैं। हरित पर्यटन से आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक लाभों को अधिगतम प्राप्त किया जा सकता है। हरित पर्यटन को समझते हुए सयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2002 को ''अन्तर्राष्ट्रीय हरित पर्यटन वर्ष'' घोषित किया। पिथौरागढ़ वास्तविक रुप में प्राकृतिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण पर्यटन क्षेत्र है। यह एक हरित पर्यटन के विकास के लिए आकर्षण केन्द्र के रूप में उभरता हुआ क्षेत्र है। मनमोहित करती पर्वत श्रृखलाएं, विशिष्ट वनस्पतियां, बुग्याल, दर्रे, ग्लेशियर, नदी, घाटियां, विशिष्ट संस्कृति व वन्य जीव अभ्यारण हरित पर्यटन के विकास को पूर्ण करने हेतु विशिष्ट रुप प्रदान करते हैं। यह भौगोलिक दृष्टि से संवेदनशील हिमालयी क्षेत्र होने के कारण यहां हरित पर्यटन और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता हैं तथा रोजगार एवं आजीविका की दृष्टि से भी स्थानीय उद्योग, दन–कालीन उद्योग, हस्तशिल्प उद्योग, बागवानी एवं होमस्टे योजना को हरित पर्यटन के साथ जोडकर स्थानीय समुदाय को रोजगार के अवसर के रूप में देखा जा सकता है। हरित पर्यटन से रोजगार का सृजन होता है या कह सकते है कि रोजगार की बड़ी सम्भावनायें स्थानीय स्तर पर मुख्य रूप से महिलाओं व बुजुर्गों को भी रोजगार प्राप्त हो सकेगा। जो यहां हिमालय के गहरी घाटियों में बसे हैं उन लोगों के लिए आय का मुख्य साधन बन सकता है।

इस क्षेत्र में छोटे बड़े मिलाकर 30 से अधिक प्राकृतिक पर्यटन स्थल है जिनको भविष्य में हरित पर्यटन स्थलों के रुप में विकासित किया जाता है। इनका विश्व स्तर पर प्रचार–प्रसार किया जाता है इससे पर्यटकों को सूचना प्राप्त हो पायेगी और सीमांत जनपदपिथौरागढ में पर्यटन विकास में एक नई दिशा मिल सकेगी। यह अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान को जोड़ सकता है, जिससे इस क्षेत्र से तेजी से हो रहे बाह्यपलायन को भी रोकने में मदद मिल सकेगा। पर्यटन शिक्षा व गाइड प्रशिक्षण से स्थानीय पर्यावरण व स्थानीय संस्कृति को जानने का नजदीकी अवसर मिल सकेगा और इसे सुरक्षित करने हेतु ठोस कदम उठाये जा सकते है। यहां की संस्कृति व वेशभूषा खान–पान की अपनी अलग पहचान है, इसके अतिरिक्त यहां के परम्परागत नृत्य छोलिया, परम्परागत पर्व हिलजात्रा मेले, भोटिया जनजाति की विशेष संस्कृति एवं राजी जनजाति द्वारा निर्मित वस्तुएं पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन सकती है। अन्ततः कहा जा सकता है कि हिमालय की गोदी में बसा यह भूमि हरित पर्यटन, इस क्षेत्र और राज्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। यह ऐसा उद्योग है जिसमें न्यूनतम पर्यावरणीय हानि से उचित आर्थिक लाभ पाया जा सकता है और विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. उत्प्रेती, आर0एम0 (2011). धरोहर जनपद पिथौरागढ़, (प्रथम संस्करण), देहरादून, सरस्वती प्रेस, 2 ग्रीन पार्क, पृ0सं0–17–37।
2. कपूर, वि0कु0 (2012). पर्यटन भूगोल, नई दिल्लीः विश्वभारती पब्लिकेशन्स।
3. कुमार, सं0 (2005). पर्यटन में भूगोल, नई दिल्लीः तक्षशिला प्रकाशन।
4. खुल्लर, डी0आर0 (2012). भूगोल मुख्य परीक्षा के लिए, (तृतीय संस्करण), नई दिल्लीः मैग्रोहिल एजुकेशन प्रा0 लि0, पृ0सं0–4.54–4.62।
5. जेशी, घ0 (2018). उत्तराखण्ड़ का राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (चतुर्थ संस्करणः 2017), मेरठः आर0 वी0 पिन्टर्स, पृ0सं0–257–264।
6. नेगी, ज0 (1999) पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त, नई दिल्लीः तक्षशिला प्रकाशन।
7. नौटियाल, रा0मो0 (2011). पौराणिक उत्तराखण्ड़ (प्रथम संस्करण), देहरादूनः विनसर पब्लिशिंग, पृ0सं0–25–47।
8. परिहार, डी0एस0 एवं दीपक (2020), पर्यटन में वैश्वीकरण के प्रयास व सकारात्मक प्रभावः जनपद अल्मोंड़ा के परिपेक्ष्य में, दृष्टिकोण, वर्ष–12, अंक–3, पृ0सं0– 1366–1375।
9. बलोदी, रा0प्र0 (2021). उत्तराखण्ड़ समग्र ज्ञानकोश (चतुर्थ संस्करण), देहरादूनः बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी, पृ0सं0–75–380।
10. बर्णवाल, एम0के0 (2021). भूगोल एक समग्र अध्ययन (चौदहवां संस्करण), दिल्लीः कोसमोस पब्लिकेशन, पृ0सं0–65।
11. भारद्वाज, अ0 (2015). इको टूरिज्म, International Journal Of Research Granthaalayah: Vol. 3 (9): pp.1-3.
12. मैठाणी, डी0डी0, प्रसाद, गा0 एवं नौटियाल, रा0 (2015). उत्तराखण्ड का भूगोल, (प्रथम संस्करण– 2010, पुनः मुद्रित– 2015) इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, पृ0सं0–188–200।
13. सिंह, रा0 (2007). सोर (मध्य हिमालय) का अतीत, दिल्लीः मल्लिका बुक्स, पृ0सं0–165।
14. सिंह, सु0 एवं परिहार, डी0एस0 (2022). तहसील बागेश्वर में पर्यटन की समस्यायें और सम्भावनायेंः सुदूर संवेदन एवं जी0 आई0 एस0 के माध्यम से, International Journal of Applied Research, Vol. 8 (3), PP. 360-374. (https://doi.org/10.22271/allresearch. 2022.v8.Be.9589)
15. सिंह,हु0, कठायत, सी0एस0, परिहार, डी0एस0, सिंह, च0प्र0, सिंह, सु0 एवं कुमार, नी0 (2022), कुमाऊँ हिमालय के विकासखण्ड मुनस्यारी में पर्यटनः विकास एवं सम्भावनायें, International Journal of Multidescipilinary Educational Research, Vol. 11, Issue- 10 (1), pp. 1-14. (http://ijmer.in.doi./2022/11.10.01)
16. हरिमोहन (2003). उत्तरांचल में पर्यटन नए क्षितिज (प्रथम संस्करण), नई दिल्लीः तक्षशिला प्रकाशन।
17. त्रिपाठी, के0एन0 (2020). उत्तराखण्ड़ एक समग्र अध्ययन (एकादश संस्करण), इलाहाबादः बौद्धिक प्रकाशन, पृ0सं0–180, 222।
18. Agarwal, M. and Pathak, P. (2014). Exploring Possibilities of Ecotourism in the Economic and Sustainable development of Kumaun Region. IJTEMT: Vol. 111, Issue- VI, pp.22-28.
19. Gill, N. and Singh, R.P. (2013). Socio-Economic Impact Assessment of Tourism in Pithoragarh District, Uttarakhand. IJARSGG: Vol. 1 (1), pp.1-7.

20. Jayara, S.J. (2017). Home-Stay tourism in Uttarakhand: Opportunities and challenges. Jouranal of Advance Management Research, Vol. 05, Issue- 05, pp.52-59.
21. Mehdi, S.A. (2013). Rural Mountain Turism Management in Pithoragarh, Kumaon Himalayas-Problems and Prospects, pp. 1-20.
22. Parihar, D.S., Rana, K.S., Singh, M., Vishwakarma, A. and Deepak (2020). Study of tourism and scope of tourism development in Uttarakhand: A case study in district Pithoragarh. प्रो0 अतुल जोशी एवं मनोज पाण्डेय (edits.), उत्तराखण्ड में पर्यटन के विभिन्न आयामः अवसर एवं चुनौतियां। जगदम्बा पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, पृ0सं0– 143–151।
23. Parihar, D.S. (2021). Study of suitable sites for tourism development in the Gori Ganga watershed Kumaun Himalaya by using remote sensing and GIS. ACADEMICIA: An International Multidisciplinary Research Jouranal, Vol.11, Issue-12, pp. 321-28 (https://doi.org/10.5958/2249-7137.2021.02695.1).
24. Parihar, Dr. D.S. (2022). Impacts, Challenges and Opportunities in Tourism Industries Due to COVID-19 Pandemic in Himalayan State Uttarakhand, India.Management Challenges and Opportunities during and after Pandemic Situations (edit. Dr. Narendra Kumar and Arjun Gupta)in Vandana Publications, pp. 111-131.
25. Parihar, D.S. and Deepak (2022). Rural tourism development in Tehsil Munsyari, Kumaun Higher Himalaya. The Deccan Geographer (International Geography Jornal), Vol. 60, (Issue-1 & 2), pp. 61-69.
26. Rana, S., Pravin, P.J., Shysu and Patnaik, S. (2011). Ecotourism in Himalayasy: A case study of Jaumsar region (Uttarakhand, India) ACADEMIA: Accelerating the Worlds Research. PP. 1-22.